ओमशांति। गीत की पहली लाइन बच्चों ने सुनी। ब्राह्मणों का साथ है ही ब्राह्मणों के साथ। गीत में भी सुना– जो पिया के साथ है....। साथ में इकट्ठे रहने का क्वेश्चन ही नहीं उठता, जो बाप के बनते हैं, वह साथ हैं। बाप के बनते हैं ब्राह्मण। वह भल कहाँ भी रहें, उनके लिए तो ज्ञान बरसात है। ब्राह्मणों के सिवाय सब हैं शूद्र, आसुरी सम्प्रदाय। उन्हों के लिए है ज़हर की बरसात। जो आकर ब्राह्मण बनते हैं वह है शिवबाबा के पौत्रे–पौत्रियाँ। प्रतिज्ञा करते हैं– बाबा, हम ज़हर का सेवन नहीं करेंगे, ज्ञान अमृत पिएँगे। अमृत कोई जल नहीं। ज़हर की भेंट (में) ज्ञान को अमृत कहा गया। तो तुम हो पांडव सम्प्रदाय, यादव सम्प्रदाय, कौरव सम्प्रदाय। पांडव सम्प्रदाय क्या करत भय गायन भी है...। तुम पांडवों पर है ज्ञान अमृत की वर्षा, बाकी जो कौरव–यादव हैं उनपर है विख की वर्षा। एक/दो को विख ही पिलाते हैं। यह भी बच्चे जानते हैं, यादव कितने हैं, पांडव बहुत थोड़े हैं। गाया भी जाता है– राम गयो (पांडव), रावण गयो (कौरव) और यादव जिनकी बहुत सम्प्रदाय है। पांडव बहुत थोड़े हैं। यह है पांडव गवर्मेन्ट श्रीमत पर चलने वाले। यह जैसे भगवान की गवर्मेन्ट है; परन्तु है गुप्त। तुम जानते हो, हम श्रीमत पर चल बेड़ा पार कर रहे हैं। जो–2 श्रीमत पर चलते हैं, वही अपना बेड़ा पार करते हैं। यादव और कौरव पास कितने ....महल आदि हैं, तुम बच्चों को कुछ भी नहीं। तीन पैर पृथ्वी के भी तुम्हारे नहीं, सब उन्हों का है। यह भी गाया हुआ है– जिनको तीन पैर पृथ्वी के नहीं मिलते थे उन्हों की विजय हुई और वह विश्व के मालिक हो गए। पांडव शक्ति सेना गुप्त है। शास्त्रों में भी दिखाते हैं– जुआ खेलते, पांडवों का राज्य था, फिर जुआ में हराया। अभी न है राज्य, न जुआ की बात है। यह सब झूठ है। तुम बरोबर पांडव हो। शिवबाबा है रूहानी पण्डा। अपने बच्चों को रूहानी यात्रा सिखाने आया है। इस ब्रह्मा तन से श्रीमत देते हैं। जैसे शिवबाबा की श्रीमत गाई हुई है वैसे ब्रह्मा की भी गाई हुई है; क्योंकि फिर भी शिवबाबा का एक ही मुरब्बी बच्चा है। इस द्वारा कितने बच्चे मुखवंशावली रची जाती है। पवित्रता का कंगन बँधवा के कहते हैं, जितना मेरी मत पर चलेंगे इतना श्रेष्ठ बनेंगे। तुम्हारा हीरे जैसा जीवन बनेगा। शिवबाबा कहते हैं, इनका (ब्रह्मा) और तुम्हारा कनेक्शन मेरे साथ है। हीरे जैसा जन्म मेरे द्वारा तुमको मिलता है; इसलिए अब देही–अभिमानी बनो। जितना शिवबाबा को याद करेंगे, देही–अभिमानी बनेंगे उतना माया वार न करेगी। बापदादा की हमेशा बच्चों पर नज़र रहती है। अगर बच्चे बेकायदे कुछ चलते तो बापदादा का नाम बदनाम करते हैं। तो शिक्षा देनी पड़ती है– ऐसा काम न करना। नाम बदनाम करने वाले लिए कहा जाता है– सद्गुरु का निन्दक ठौर न पावे...। ऐसा कोई उल्टा अकर्तव्य न करना है। तुम बच्चे जानते हो, भगवान हमको पढ़ा रहे हैं। कहते हैं– पवित्र बनो। विकारों को भगाने में है मेहनत। जो–2 जितना शिवबाबा को याद करेंगे उतना विकर्म विनाश होंगे। याद को ही देही–अभिमानी कहा जाता है। देह–अभिमानी होने से माया का वार जोर से होगा। बड़ी मंज़िल है। 8 स्कॉलरशिप लेते हैं। कितने ब्राह्मण बनने वाले हैं। गाया जाता है– 33 करोड़ देवताएँ। विजयमाला में वह आते हैं जो देही–अभिमानी बनते हैं। देह–अभिमानी बनना माना माया का होना, देही–अभिमानी बनना माना बाप का बनना। यह बात बड़ी सूक्ष्म है। पुरुषार्थ कर बाप को याद करना है। वह बाप भी है, साजन भी है, अपार सुख देने वाला है। कहते हैं– तुम बच्चों लिए तीरी पर बहिष्त ले आया हूँ, सिर्फ तुम श्रीमत पर चलो। श्रीमत कहते हैं– देही–अभिमानी भव....। देह–अभिमान (ने) तुम्हारा बेड़ा गर्क किया है। माया तुमको देह–अभिमानी बनाती है। रूहानी बाप को सब भूले हुए हैं। अभी ... बाप ने आकर परिचय दिया है, तुम अपन को नंगा समझो। मेरा तो शिवबाबा और वर्सा, स्वर्ग की राजाई, बस। देह–अभिमान में आ ''यह मेरा, यह मेरा'' कहा तो स्वर्ग का राज्य ले न सकेंगे।

हम आत्मा है, यह पक्का निश्चय करो। सन्यासियों ने जो भूसा दिया है– आत्मा सो परमात्मा, वह बुद्धि से निकाल दो। अब देही–अभिमानी बनो, बाप को याद करो, तेरा बेड़ा पार होगा। श्रीमत पर चल देही–अभिमानी न बनेंगे तो माया बेड़ा गर्क कर देगी। ऐसे बहुतों का बेड़ा गर्क किया है; क्योंकि श्रीमत पर न चलते हैं। युद्ध का मैदान है। कोई गिरी प्वाइंट पर हार न खानी है। काम का भूत तो एकदम पुर्जा–2 कर देती है। सेकेण्ड नम्बर है क्रोध का भूत। क्रोध से देखो, एक/दो को मार खलास करते हैं। यादवों का क्रोध बढ़ेगा, एकदम जैसे डेविल्स बन जाएँगे। क्रोध भी बड़ा भारी दुश्मन है। काम को न जीते तो पवित्र दुनिया का मालिक न बन सकें। क्रोध भी बड़ा दुश्मन है कड़ा, खुद को भी, औरों को भी दुःख देते हैं। यह भी है भावी। अब यादव–कौरव–पांडव क्या कर रहे हैं, तुम ही जानते हो। यह है पांडव गवर्मेन्ट। अब तुम देखते हो, पांडवों का तो कुछ राज है नहीं। तीन पैर पृथ्वी के भी नहीं मिलते। कौरवों का तो देखो, कितना दबदबा है! कितने महल आदि हैं! पांडवों का कुछ भी नहीं। तुम बच्चों में बहुत थोड़े हैं जो नारायणी नशे में रहते हैं। नशे सभी में है नुकसान। देह–अभिमान में आने से बड़ा नुकसान है। तो बाप समझाते हैं, सदैव शिवबाबा को याद करो। ऐसे मत समझो, यह ब्रह्मा ज्ञान देते हैं। समझाते हैं, शिवबाबा को याद करो। भल समझो, यह भुट्टू है, शिवबाबा कहते हैं, मेरे साथ योग लगाओ। यह (ब्रह्मा) भी मेरे साथ योग लगाते हैं। मुझे याद करेंगे तो मैं मदद करता रहूँगा। देह–अभिमानी बनने से माया वार करेगी और फिर एक/दो को दुःख देते रहेंगे। इसमें भी दो हैं कड़े दुश्मन। नम्बरवार तो होते हैं न! काम–क्रोध हैं प्रत्यक्ष विकार, मोह–लोभ आदि तो गुप्त होते हैं। तो इन भूतों पर विजय पानी है। बाप कहते हैं, तुमको तीन पैर पृथ्वी के नहीं मिलते हैं तो मैं तुमको विश्व का मालिक बनाता हूँ। तो मालिक बनना चाहिए न! बाप की हमेशा दिल होती है, बच्चा नाम निकाले। कोई पूछे, किसके बच्चे हो? फलाने के। ओ हो! बाप ने तो बच्चों को बहुत ऊँचा बनाया है! 5–7 बच्चे हैं, कोई इंजीनियर, कोई बैरिस्टर, कोई क्या– तो बाप खुश होता है। कोई–2 बच्चे तो बाप की इज्जत भी लेने में देरी न करते हैं। तुमको तो बाप की इज्जत बढ़ानी है न। कुलकलंकित बच्चे के लिए तो बाप कहेंगे– मुआ भला। यह बाप भी ऐसे कहेंगे। तुम ईश्वरीय कुल को कलंक लगाते हो कामी–क्रोधी बनकर। बाप से वर्सा तो पूरा लेना चाहिए। देखते हो, मम्मा–बाबा पहले नम्बर में ल०ना० बनते हैं, तो क्यों न हम इनके तख्त पर जीत पहने! बरोबर तुम माँ–बाप के तख्त को जीतते हो न! बच्चे तख्त पर बैठेंगे तो नीचे आ जावेंगे। अब राजधानी स्थापन हो रही है, बाप कहते हैं, राजाई प्राप्त करो। प्रजा में न आना है। नारायणी नशा रहना चाहिए। भल प्रजा में भी धनवान बहुत होते हैं; परन्तु फिर भी प्रजा कहेंगे न! राजाओं से भी प्रजा में साहुकार होते हैं। इस समय गवर्मेन्ट कंगाल है, कर्जा लेती है। तो प्रजा साहुकार हुई न! बाप समझाते हैं, तुम जानते हो भारत की गवर्मेन्ट (भी) ल०ना० थी, अब फिर होनी है। तो पुरुषार्थ करना है। बाप की श्रीमत पर चलने से ही बेड़ा पार होना है, श्रेष्ठ बनेंगे, नहीं तो माया खा जावेगी। बहुतों को खा गई। भल यहाँ से निकले हैं, बड़े लखपति बन गए हैं। भाजी बेचने वाले आज करोड़पति हो गए। बाबा के पास आते हैं, कहते हैं– बाबा, अभी तो पैसा बहुत हो गया है। बाबा कहते हैं, तुम्हारे ऊपर बोझा भी बहुत है। शिवबाबा से तुमने पालना भी ली है, खर्चा हुआ है; इसलिए अब खबरदार रहना। तो वह भी समझते हैं, बोझा उतार लेवें। ऐसे बहुत मिलते हैं। मित्र–संबंधी आदि हैं तो सही। गवर्मेन्ट भी आए पैसे पिछाड़ी पड़ी है तो समझाते हैं, कहाँ रखें। कराची में तुम बच्चियाँ भागी थीं, कुछ ले आए थे क्या! कुछ भी है। भागी थी, फिर शिवबाबा के खज़ाने से तुम्हारी परवरिश हुई। जो कोई–2 शिवबाबा के पिछाड़ी सरेण्डर हुए, उनसे

हम बच्चों की पालना हुई। रात को एक/दो बच्चे भागे। बाबा को थोड़े ही पता था कि यह आपस में ऐसे मिलकर आ जावेंगे। बस, शिवबाबा ने उनकी बुद्धि में डाला और भट्ठी बननी थी, तो सब भागकर आ गए। तो परवरिश के लिए कई बलि चढ़े, फिर उनसे कितने भाग गए। माया ने हार खिलाए दी। माया भी कोई कम समर्थ नहीं है। अब उसपर जीत पानी है बाप की याद से। योग अक्षर नहीं बोलो। कई बच्चे कहते हैं, योग में बिठाओ; परन्तु यह आदत पड़ जावेंगे तो फिर चलते–फिरते तुम याद न कर सकेंगे। नए को भी यह नहीं सिखलाना है कि योग में बैठो। नए–2 को तुम अपने सामने बिठाती हो तो वह नाम–रूप में फँस पड़ते हैं। अनुभव ऐसा दिखाता है; इसलिए मना की जाती। माँ–बाप को एक जगह याद करना होता है क्या...। बाबा को याद न करेगी तो स्वर्ग का मालिक कैसे बनेंगे! उठते–बैठते–सर्विस करते बाबा को याद करो। बाबा को याद करते–2 तुम सर्विस कर रहे होंगे तो बैठे–2 तुम्हारा कलम खड़ा हो जावेगा, (टे)बल पर बैठे–2 ध्यान में चले जावेगा, ऑफिसर कुछ भी बोलेगा नहीं। फिर नीचे उतरे, वह पूछे क्या हुआ? बोलो, हम तो शिवबाबा की याद में बैठे थे, बाबा ने रस्सी खींच ली, हम मूलवतन में चले गए। बाबा के जो लाल होंगे वह रात को याद करते रहेंगे। ऐसा मोस्टफुल बाबा, जिससे विश्व का मालिक बनते हैं तो क्यों न उनको याद करेंगे! पारलौकिक बाप से अथाह सुख का वर्सा मिलता है। तुम अभी ही पुरुषार्थ करते हो, मेहनत करते हो, जो फिर जन्म–जन्मांतर ईश्व(रीय) प्रालब्ध तुम भोगते हो। ऐसे नहीं, वहाँ सतयुग में तुम ऐसे कर्म करते हो तब राजाई मिलती है। नहीं। यहाँ के ही पुरुषार्थ की वह प्रालब्ध पाते हो। बड़ा भारी पद है! ऐसे बहुत आए, फिर आश्चर्यवत् सुनन्ति, कथन्ति, भागन्ति हो गए। बहुत सेन्टर्स भी स्थापन करन्ति, फिर भागन्ति, गिरन्ति हो पड़े। कोई सेन्टर स्थापन कर फिर आहिस्ते–2 गिर पड़ते। वण्डरफुल माया है न! माया झट नाक से पकड़ लेती है; इसलिए बाप कहते हैं– निरंतर याद करो।

समझो, शिवबाबा समझाते हैं। यह भुट्टू है, मम्मा तीखी है। बाप निराकार, निरहंकारी है तो बच्चों को भी समझना है हम निराकारी आत्मा हैं। निरहंकारी बनना है तब ही वर्सा पावेंगे। देह–अभिमान कब आना न चाहिए। बहुत मीठा बनना है। बाबा की कितनी महिमा है– कितना मीठा, कितना प्यारा है। इसलिए गाया जाता है– वहाँ शेर–बकरी इकट्ठे जल पीते हैं। वहाँ माया होती नहीं। तो क्यों न बाप से वर्सा लेवें! बाबा का राइट हैण्ड बन जावें! वह कौन बनते हैं? जो सेन्टर स्थापन करते हैं, कमाल करते हैं, कितने का कल्याण करते हैं। कोई सेन्टर स्थापन कर कब फिर खुद चले जाते हैं। उनका भी अहो भाग्य! उसका भी फल मिल जाता है– एक तरफ जमा, फिर दूसरी तरफ ना हो जाती है। यह तो बाप जानते हैं, ब्रह्मा भी जान सकते हैं। एक ही मुरब्बी बच्चा है। तुम हो सब पौत्रे–पौत्रियाँ। तुम जानते हो, मम्मा नम्बरवन में आती है, बाबा सेकेण्ड नम्बर में आते हैं। माताओं, ज्ञान गंगाओं को उठाना ही है। इनका रिगार्ड बहुत रखना पड़े। बाबा कहते हैं– वन्दे मातरम्, तो बच्चों को भी वन्दे मातरम् करना पड़े। माता बिगर उद्धार हो न सके। वही निमित्त बनी हुई हैं। नम्बरवन हैं माताएँ शक्ति सेना। जगदम्बा में कितना लव चाहिए, जो बेड़ा पार करती हैं। तुम जानते हो, यह हमारी मम्मा का यादगार है, यह बाबा का यादगार है। क्वारी कन्या का भी मंदिर है। क्वारा बालक या पुरुष नहीं। वास्तव में हैं सब सीताएँ। जैसे तुम अधर कन्या, यह अधर कुमार है। हैं सब सजनियाँ एक साजन की अथवा सब बच्चे हैं एक बाप के। अज्ञान काल में डाडे का वर्सा सिर्फ बच्चे को मिलता है, बच्ची को नहीं। यहाँ तो पौत्रे–पौत्रियाँ सबको डाडे का वर्सा मिलता है। आजकल गवर्मेन्ट ने कुछ उठाया है; इसलिए बच्ची को मिलता है। जबकि बड़ी पांडव गवर्मेन्ट ने माताओं को उठाया है तो कौरवों ने भी माताओं को उठाया है। खुद भी कहते हैं– वन्दे मातरम्। जैसे कर्म मैं करूँगा, मुझे देख बच्चे भी ऐसे करेंगे। माताओं की

(बहुत) सम्भाल करनी है। उन पर अत्याचार बहुत होते हैं। कोई विघ्न डालते हैं तो भी बिचारी माताएँ बाँध हो (जाती) हैं। पाप का घड़ा जो भरना है, ऐसे भरता है। असुर मारते हैं तो पाप आत्मा बन पड़ते हैं। है तो सब ड्रामा अनुसार। इसको कोई मिटाय नहीं सकते। कल्प पहले मुआफिक हर एक अपना वर्सा लेने वाले हैं। सा० होता है– कौन–2 अच्छे मददगार होते हैं। शिवबाबा कहते हैं, मैं दाता हूँ, तुम कुछ देते नहीं हो, लेते हो। अगर यह ख्याल रहता है कि हम देते हैं, अहंकार आया और मरे। शिवबाबा कहते हैं– तुम तो ठिक्कर–भित्तर देकर रिटर्न में कितना लेते हो। बाबा हमेशा दाता है। शिवबाबा को मैं देता हूँ, यह कब बुद्धि में आना न चाहिए। मैं एक पैसा देकर लाख लेता हूँ, 21 जन्म लिए राजभाग लेता हूँ। बाप है सद्गति दाता, झोली भरने वाला। गुप्त दान करना होता है। बाबा भी गुप्त है न! दुनिया थोड़े ही जानती है, तुम विश्व के मालिक बनते हो। तुम हो शिवबाबा के पौत्रे–पौत्रियाँ। प्रजापिता ब्रह्मा कहते हैं तो ज़रूर ढेर बच्चे होंगे न! उन्होंने फिर कृष्ण के लिए लिख दिया है, इनको इतनी रानियाँ थीं। बुद्धि कुछ भी काम नहीं करती। कहते भी हैं "तुम मात–पिता, हम बालक तेरे", तो फिर ब्रह्माकुमार–कुमारियों को बाप से भारी वर्सा मिलता होगा। ब्रह्मा की इतनी संतान हैं। यह नई दुनिया की रचना है। शिवबाबा है रचता, उनसे हम स्वर्ग का वर्सा लेते हैं। ब्रह्माकुमारियों को डाडे का वर्सा मिलता है। क्रियेटर ब्रह्मा को नहीं कहेंगे। गॉड फादर शिव को कहा जाता है, ब्रह्मा को नहीं। अच्छा है, आज है बृस्पत डे। अविनाशी बृहस्पत की दशा आ रही है। श्रीमत पर चलने से अविनाशी बृहस्पत की दशा बैठती है। श्रीमत पर कम चलते हैं तो शुक्र की, बुद्ध की दशा बैठ जाती है, नहीं तो राहू की दशा बैठ जाती है। बच्चों को कब बृहस्पत की, कब राहू की दशा बैठती है। यह कमाई है न! सारा मदार कमाई पर है; इसलिए श्रीमत से पूछते रहो– बाबा, मैं ठीक चल रहा हूँ। मेरे पर बृहस्पत की दशा है या शुक्र की? बाबा झट बतलाते रहेंगे। एक्टीविटी पर शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा बताते रहेंगे। यह तो अब तुम जानते हो, यादव–कौरव–पांडव क्या करत भय। पांडवों को तीन पैर पृथ्वी के भी मुश्किल मिलते। पढ़ाई लिए भी तीन पैर पृथ्वी नहीं मिलती, नहीं तो उन्हों के लिए बहुत बड़ा कॉलेज चाहिए। यह है विश्वविद्यालय। गवर्मेन्ट को लिखो कि यह गॉडली यूनिवर्सिटी है। तो मानते नहीं, कहते हैं– यूनिवर्सिटी कौरवों की होती है, पांडवों की नहीं। पांडवों से सबकी दुश्मनी है। तुमको बेफ्रिक, फखुर में रहना है। तुम्हारे जैसा खुशनसीब हो नहीं सकता। तुम्हारा पार्ट है हीरो–हीरोइन का। राजा–रानी को सेना तो चाहिए न! तुम सेना हो शिवशक्ति भारत माताएँ, तुम भारत को स्वर्ग बनाय रहे हो। जितना जो स्वर्ग बनाने मदद करेगा तो उतना बाप से वर्सा लेगा। पूछ सकते हैं– बाबा, इस हालत में अगर हमारा शरीर छूट जाए तो क्या बनेंगे? बाप बताय सकते हैं। सर्विस से तुम बच्चे भी समझ सकते हो। जो सर्विस कर बहुतों का जीवन हीरे जैसा बनावेंगे तो अति इन्द्रिय सुख में गदगद होते रहेंगे, हर्षितमुख रहेंगे। बाप को अथवा साजन को याद करने से चेहरा एकदम खिल जावेगा ल०ना० समान। अच्छा, आज भोग है। बाबा को बतलाना, कौन–2 मुख्य योद्धे आए हैं। पटना का हीरालाला बाबू, श्री हनुमान भी आए हैं। कमाल की थी, जब बॉम्बे में सबको ले आए थे। सेलन्टर(सेंटर) खोलने वाले महावीर ही ठहरे। शिवबाबा कहते हैं यह (ब्रह्मा) हमारी लेंड लेडी भी है, लेंड लॉर्ड भी है। मेरी बनी है, इन द्वारा मैं तुमको एडॉप्ट करता हूँ। कितनी वण्डरफुल बाते हैं! गीता में थोड़े ही कुछ है। मनुष्य मकान लोन लेते हैं, भूत भी प्रवेश करते हैं तो गोया लोन लेते हैं न! वास्तव में यह दुनिया है रावणों की, इसमें 5 भूतों की प्रवेशता है। बाप आकर भूतों को निकालते हैं। अच्छा, बापदादा, माँ का मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को यादप्यार, गुडमॉर्निंग। ॐ